एक सी बी टी प्रकाशन

किटी पतंग

कावेरी भट्ट



चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट एवं यूनिसेफ के संयुक्त प्रयास से सन् १९८५ में राष्ट्रीय बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता का अभिप्राय था पुस्तक की कथा-वस्तु में लड़के-लड़कियों का समान रूप से चित्रण। 'किटी काइट' नामक अंग्रेजी की प्रविष्टि इस प्रतियोगिता के लिए आई थी। 'किटी पतंग' इस का हिन्दी रूपान्तर है।

सी बी टी द्वारा प्रकाशित लेखिका की अन्य पुस्तकें हैं — 'जंगल में वे दो दिन' और 'कुकू घड़ी'।

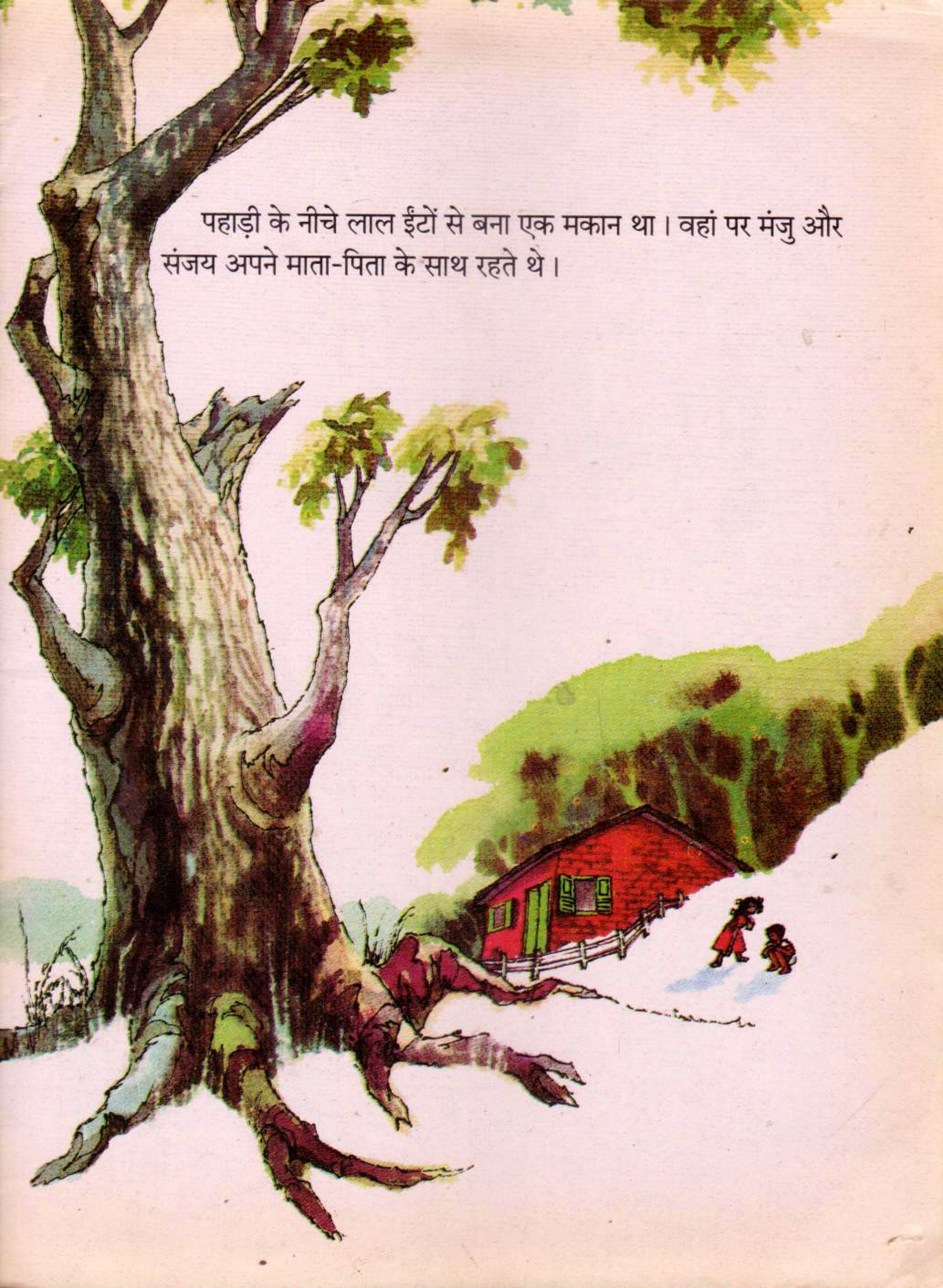


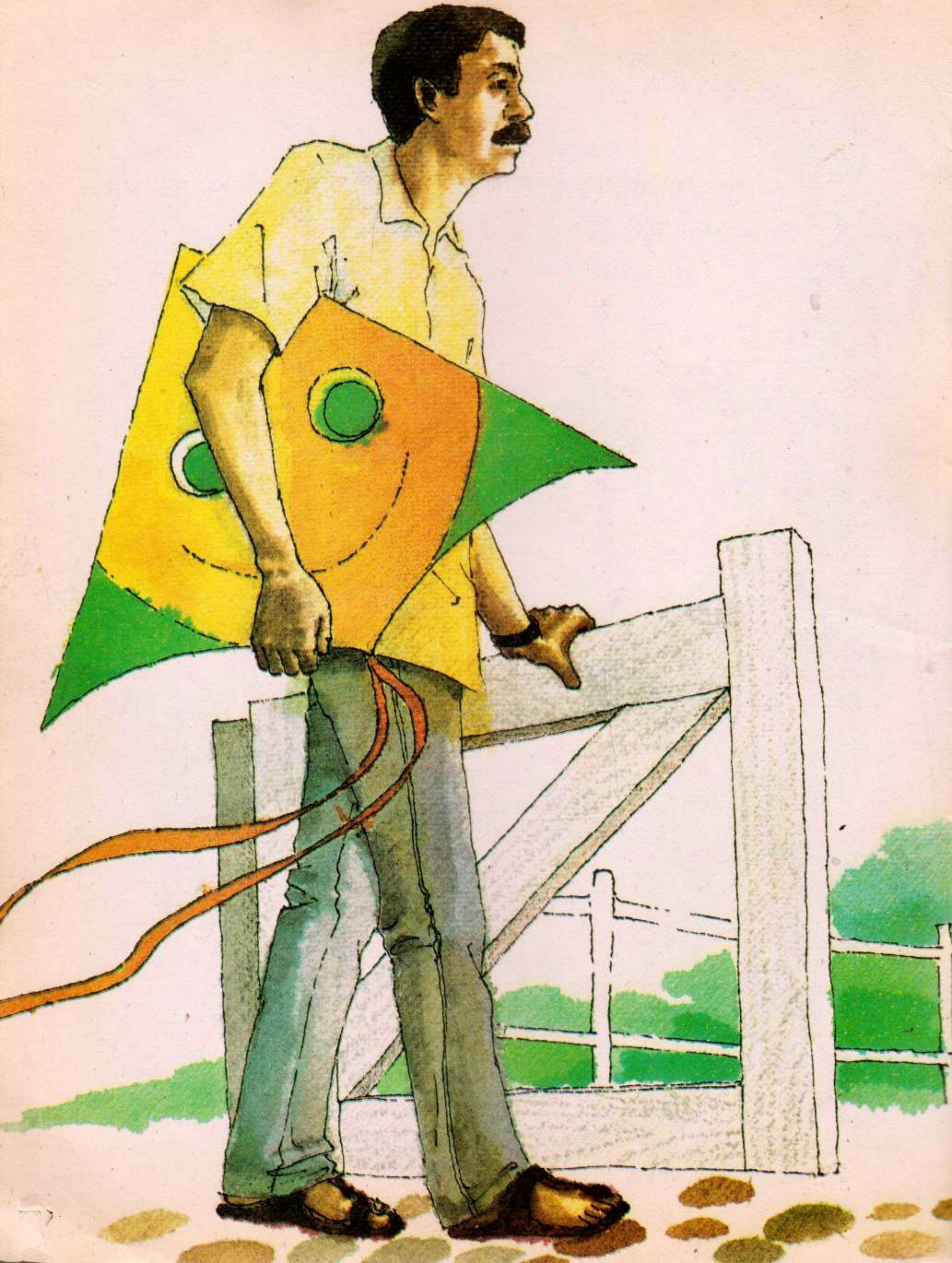
KITY PATANG

चित्रकार सुजशा दासगुप्ता
अनुवाद मनमोहिनी पुरी

ISBN 81-7011-372-5

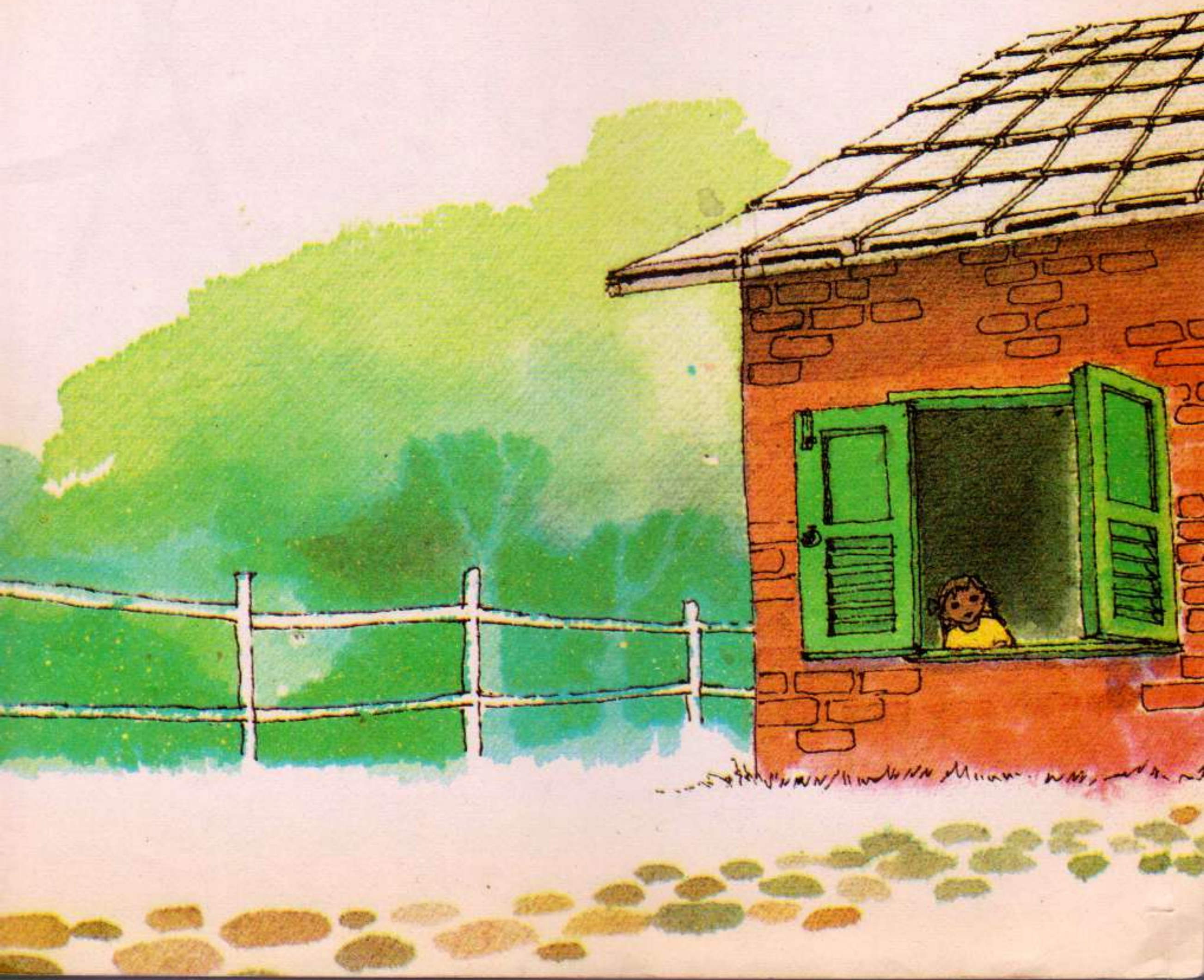
पहाड़ी के नीचे लाल ईंटों से बना एक मकान था। वहां पर मंजु और संजय अपने माता-पिता के साथ रहते थे।





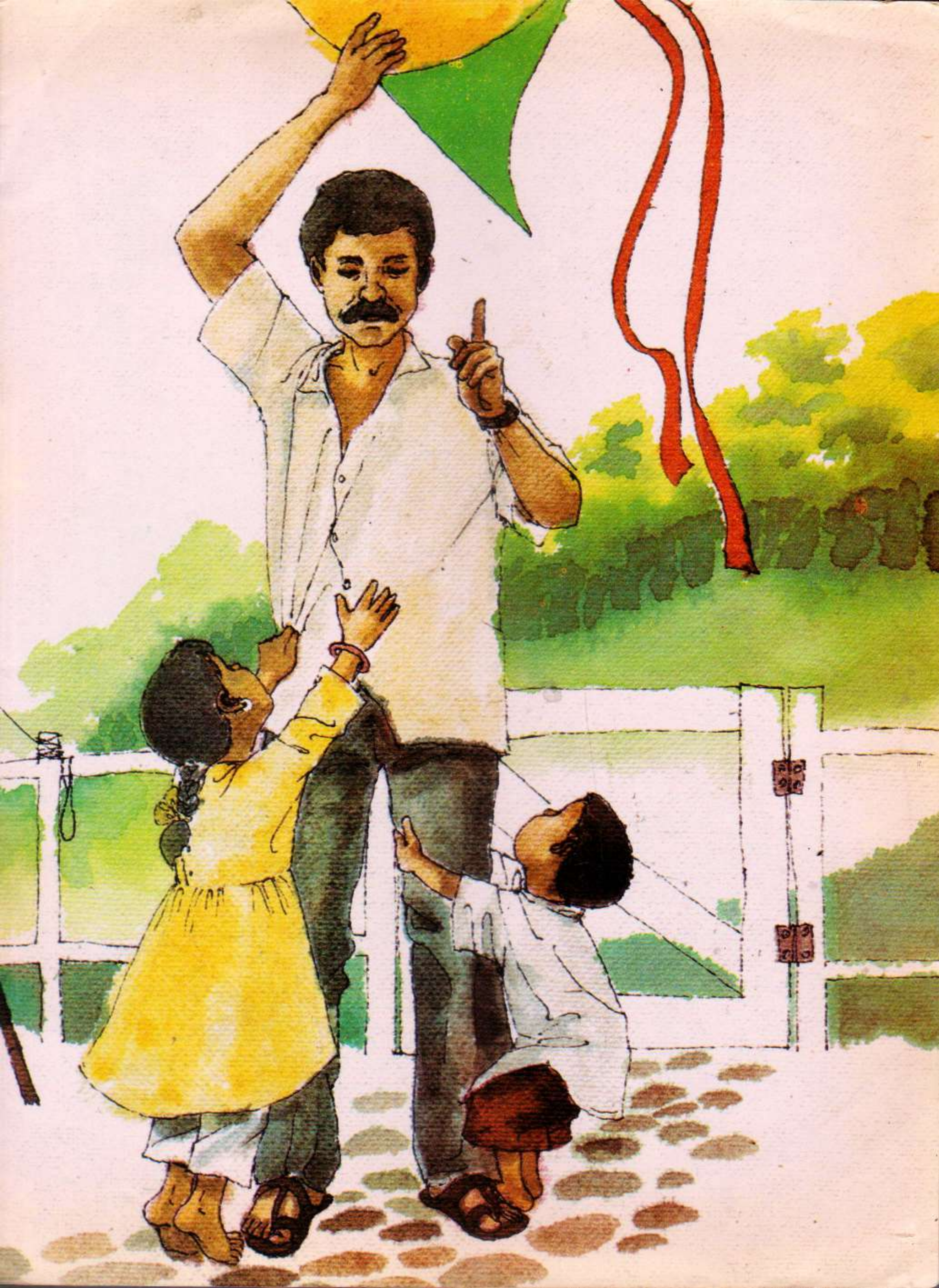
एक सुबह मंजु ने अपने पिता को फाटक में से आते देखा। उन्होंने बगल में एक बड़ी और चटकीली पीली-हरी और नारंगी पतंग दबा रखी थी। उसकी दुम हवा में लहरा रही थी।

यह बड़ी सुन्दर पतंग थी— मंजु जितनी ही बड़ी होगी।



मंजु फौरन दरवाजे से बाहर भागी। उसके पीछे-पीछे संजय था।
"अरे पंतग - पतंग!" वे चिल्लाये और अपने पिता से चिपक गये।
मंजु बोली, "यह मेरे लिये है।"
संजय चिल्लाया, "नहीं, यह मेरे लिये है।"
पिता ने पतंग को सिर से ऊपर उठा लिया और हंसते हुए कहा, "यह तुम दोनों के लिये है। तुम लड़ना बन्द करो तभी मैं तुम्हें इससे खेलने दूंगा।"





जब वे दोनों शान्त हुए तो उन्होंने पतंग बच्चों को खेलने के लिये दे दी। मंजु को ऐसा लग रहा था कि पतंग उसे देखकर मुस्करा रही है।





"संजय डोर लाओ। चलो जल्दी करो," उसने कहा।

उस सुनहरी सुबह का एक क्षण भी वे नहीं गंवाना चाहते थे। वे भागते-भागते गये और पहाड़ी के ऊपर पहुंच कर रुक गये।



मंजु ने बहुत सम्भाल कर पतंग को ऊपर उठाया और ऊंचा करके पकड़े रही। संजय पतंग से बंधी डोर पकड़ कर पिछली ओर भागा।

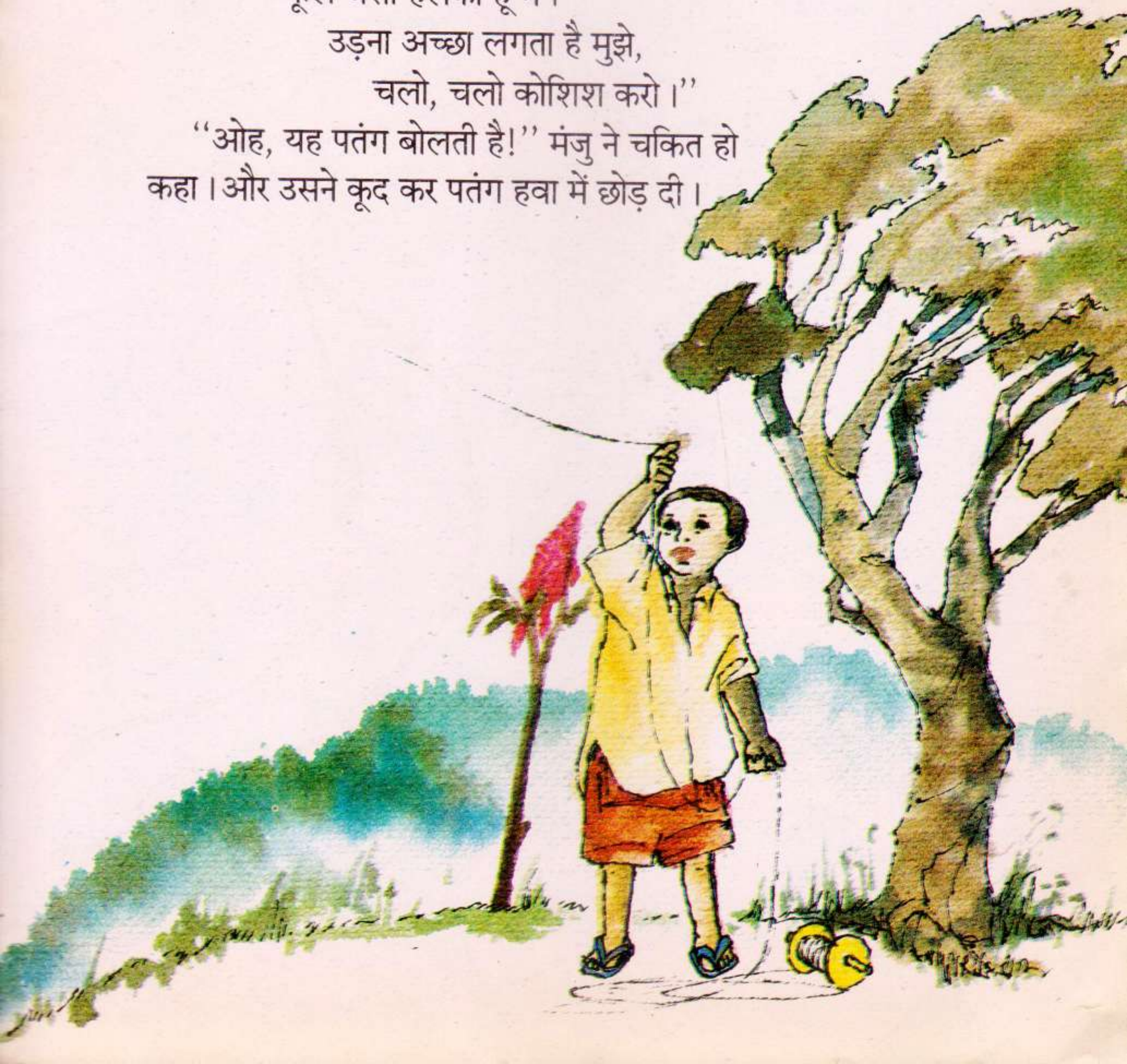
मंजु ने पूछा, "तैयार?"

संजय ने कहा, "हां तैयार हूं।"

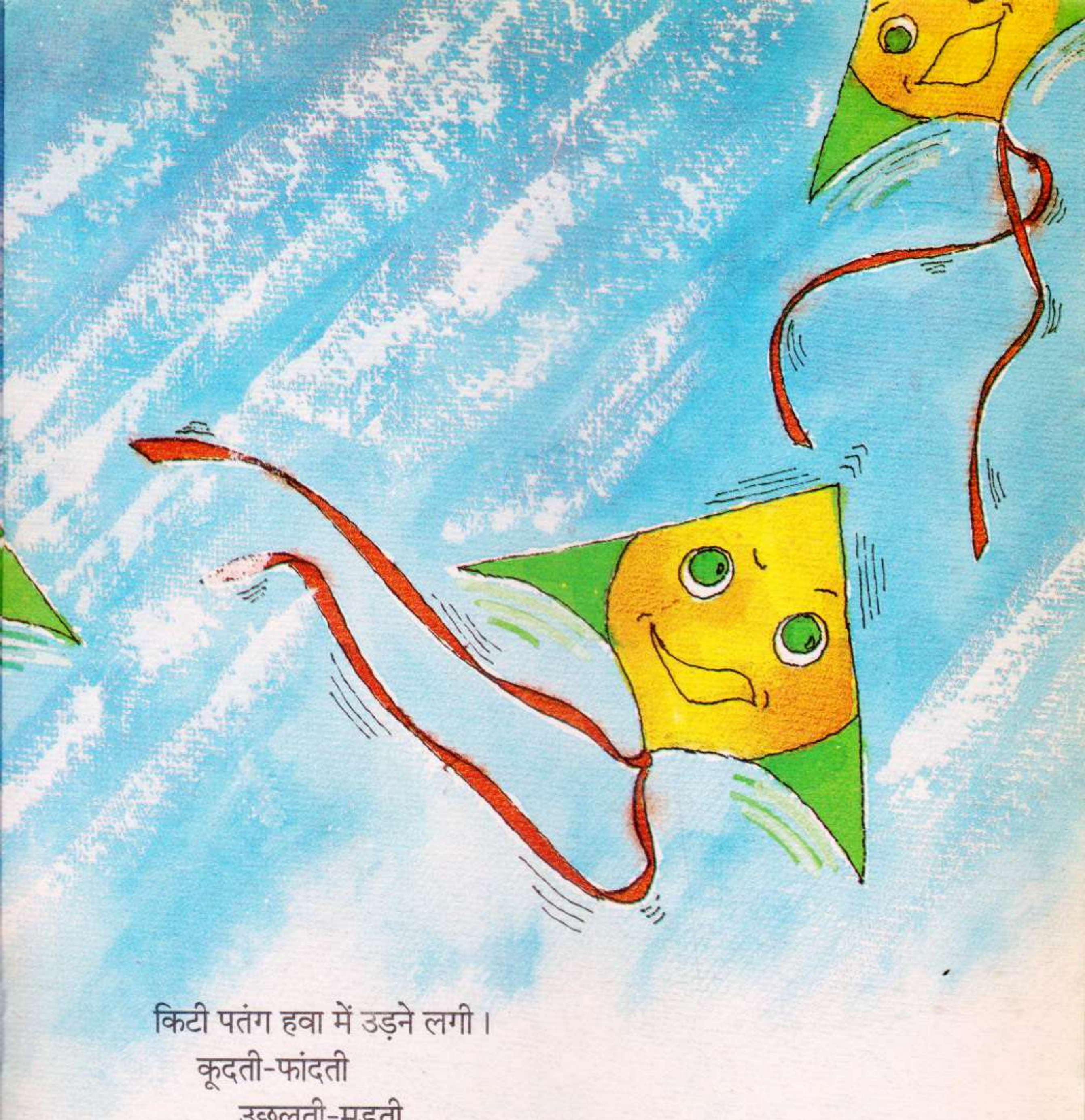
एक तीखी आवाज़ आई, "तैयार।"

"किटी पतंग हूं मैं,
फूल जैसी हलकी हूं मैं।
उड़ना अच्छा लगता है मुझे,
चलो, चलो कोशिश करो।"

"ओह, यह पतंग बोलती है!" मंजु ने चकित हो कहा। और उसने कूद कर पतंग हवा में छोड़ दी।







किटी पतंग हवा में उड़ने लगी।
कूदती-फांदती
उछलती-मुड़ती
थिरकती-फिरकती
झूलती-डोलती
पतंग जा रही थी।
नीले आकाश में मंडराती किटी पतंग बहुत सुन्दर लग रही थी।





मंजु और संजय बहुत खुश थे और धूप के कारण आंखें मिचका-मिचका कर उसे देख रहे थे। किटी ऊपर और ऊपर उड़ती गई।

वह इतनी ऊपर चली गई कि

आकाश में

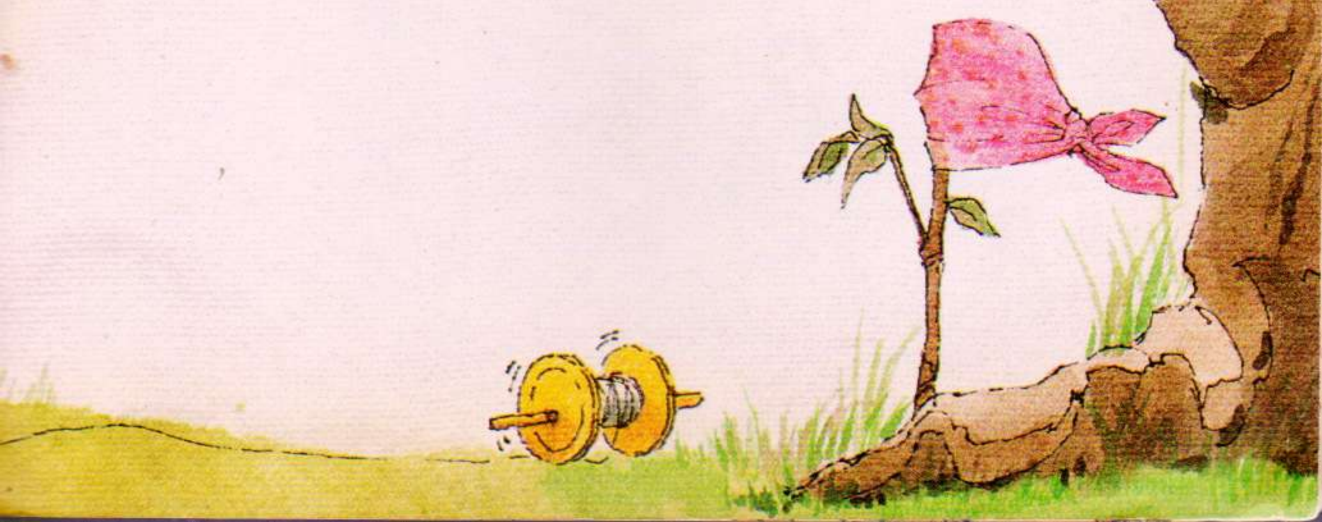
केवल

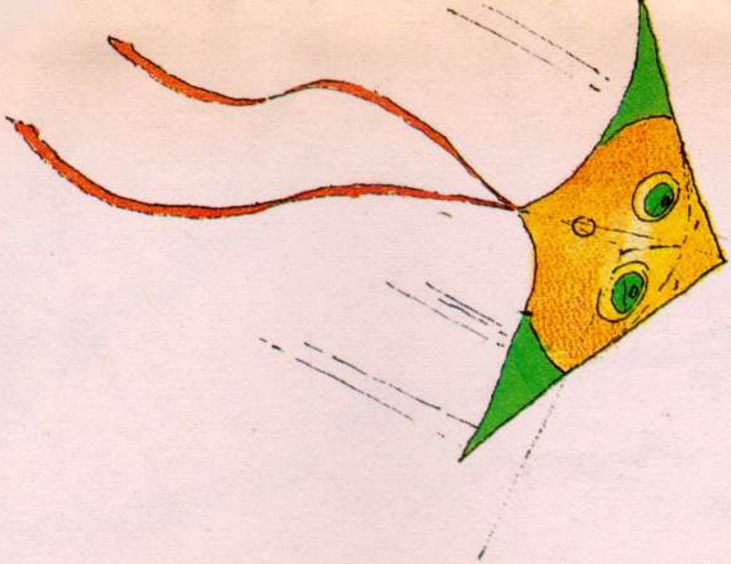
पीला

धब्बा-सा ही लगने लगी।

आखिर घर जाने का समय आ गया। मंजु ने मुंह पर हाथ लगा कर आवाज़ दी, "हॅलो... किटी... मुझे सुन सकती हो क्या? अब हम तुम्हें नीचे उतारेंगे।"

आकाश की ऊंचाई से किटी की घंटी जैसी हंसी सुनाई दी।





"संजय, डोर को लपेटो," मंजु ने अपने भाई से कहा, "धीरे-धीरे, खूब सावधानी से।"

संजय ने धीरे-धीरे बड़ी सम्भाल कर डोर लपेटनी शुरू की।

छोटा

पीला

धब्बा

बड़ा

होता जा रहा था। अब वह इतना बड़ा हो गया कि मंजु और संजय उसका हंसता मुखड़ा देख सकते थे।

अचानक हवा का एक जोरदार झोंका आया।

किटी अपना सन्तुलन न रख सकी। मंजु और संजय भयभीत से किटी को नीचे गिरता देखते रहे। गिरते-गिरते वह एक पेड़ की टहनी में अटक गई।







वे चिल्लाते हुए भागे-भागे पेड़ तक पहुंचे, "किटी, किटी, तुम्हें चोट तो नहीं लगी?"

"हां... हां," उन्होंने पेड़ की ऊपरी टहनियों से एक धीमी-सी आवाज़ सुनी।

"मुझे यहां से उतार लो। कहीं मैं डालियों में फंस कर फट न जाऊं।"

मंजु और संजय चिल्लाये, "हम अभी उतारते हैं।"

"लेकिन कैसे?"

"मैं पेड़ पर चढ़ती हूं," मंजु संजय से बोली, "मैं पतंग छुड़ाकर तुम्हें पकड़ा दूंगी।"







उसने अपने जूते उतारे और पेड़ पर चढ़ने लगी। मंजु को पेड़ों पर चढ़ना बहुत पसन्द था। लेकिन इस पेड़ पर चढ़ना आसान नहीं था। तना मोटा और चिकना था और टहनियां आकाश को छू रही थीं। किटी बिलकुल फुनगी पर अटकी हुई थी।

लेकिन मंजु किटी को बचाने के लिये पूरे जोरशोर से तैयार थी। उसने तने को अपने बाजू से घेर कर पकड़ लिया और पैर की उंगलियां तने में गड़ाते हुए ऊपर चढ़ने लगी। उसके पैर अक्सर फिसल जाते, हाथों को चोट लगती लेकिन मंजु दृढ़ता से चढ़ती रही। अब वह पहली डाल पर पहुंच गई थी।

मंजु ने ऊपर देखा तो उसे किटी का आंसुओं से भीगा चेहरा पत्तों में से झांकता दिखाई दिया। उसने हाथ फैलाया मगर किटी की नारंगी दुम तक को न छू सकी।

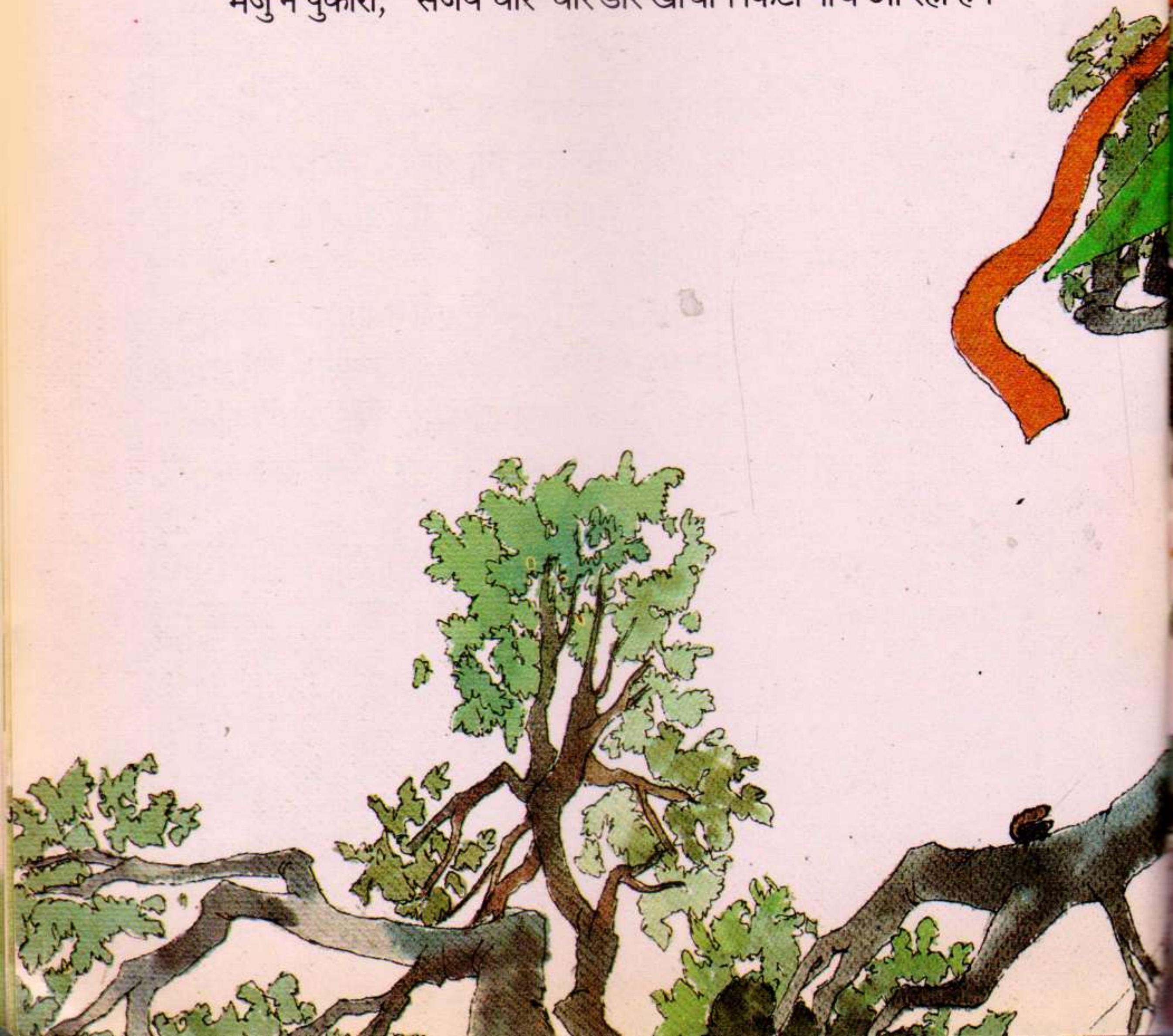


किटी बोली, "जल्दी करो। यहां ऊपर हवा बड़ी तेज़ है। वह मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देगी।"

"किटी, फिकर मत करो, मैं आ रही हूं," मंजु ने ढारस बंधाते हुए कहा। वह बहुत थक गई थी लेकिन वह हार नहीं मानने वाली थी। मंजु जैसे-तैसे ऊपर चढ़ी और झूल कर सबसे ऊपरी डाल पर पहुंच गई।

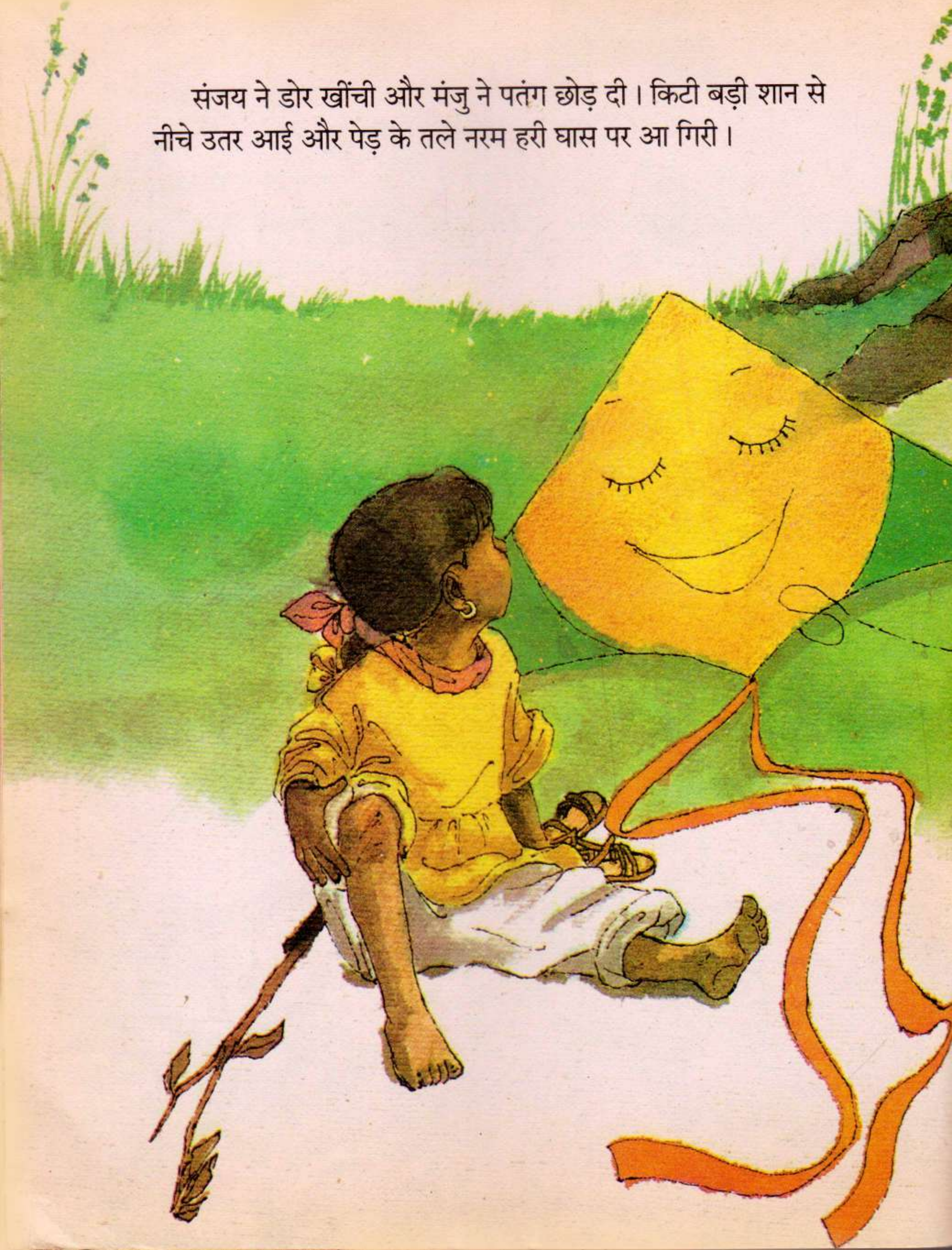
उसने फुनगी पर अटकी पतंग को उठाया और धीरे-धीरे पत्ते और शाखाओं से छुड़ाया।

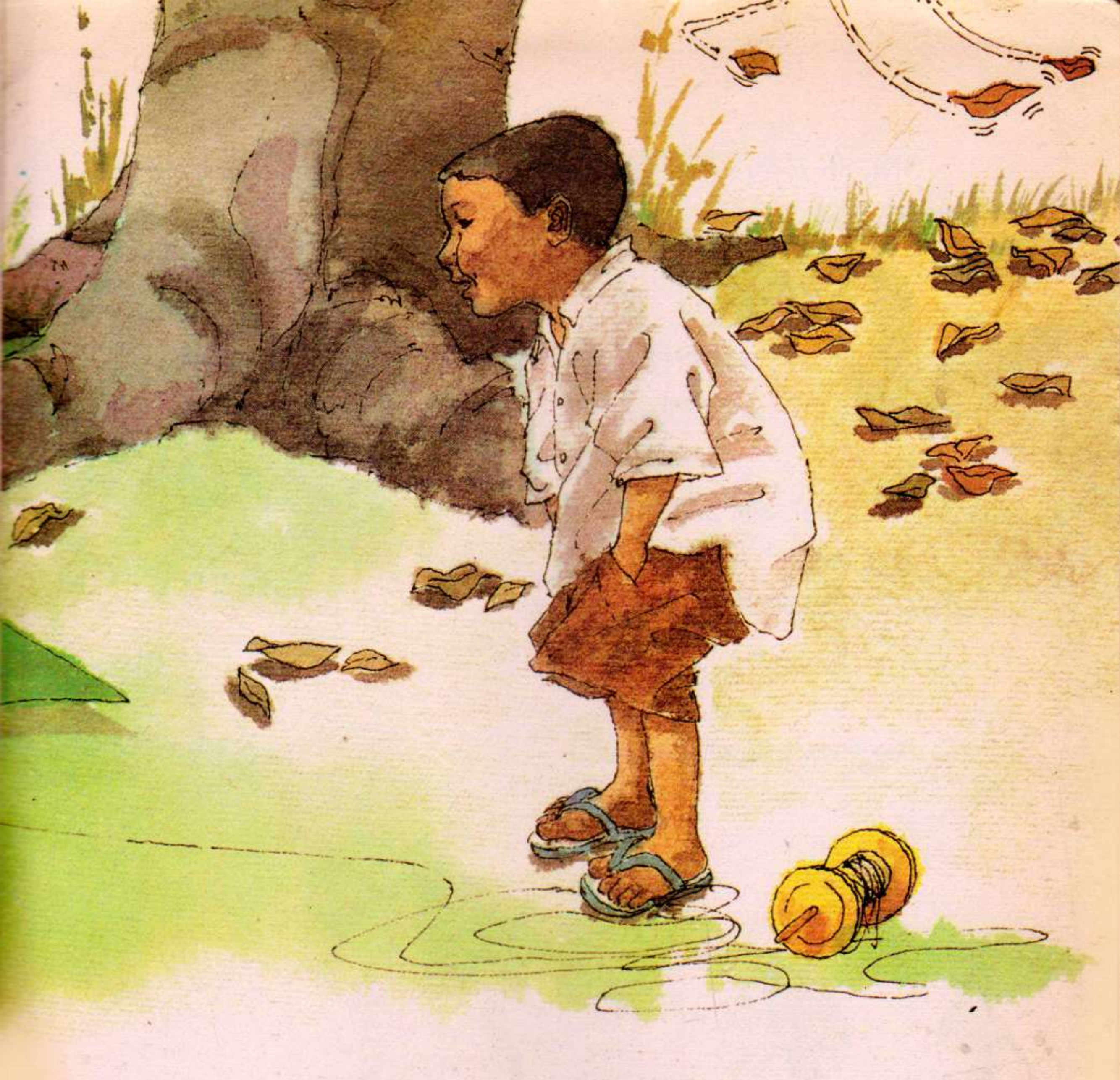
मंजु ने पुकारा, "संजय धीरे-धीरे डोर खींचो। किटी नीचे आ रही है।"





संजय ने डोर खींची और मंजु ने पतंग छोड़ दी। किटी बड़ी शान से नीचे उतर आई और पेड़ के तले नरम हरी घास पर आ गिरी।





किटी मंजु और संजय से बोली, "मुझे बचाने के लिये धन्यवाद। लेकिन मंजु तुम्हारे घुटने में खरोंचें लग गई हैं।"

"वे जल्दी ही ठीक हो जायेंगी," मंजु ने घुटने साफ करते हुए कहा। "तुम्हें कैसा लग रहा है किटी?"

"बिलकुल ठीक," किटी बोली। "क्या एक बार फिर उड़ूं? मैं देखना चाहती हूं कि मैं उड़ सकती हूं या नहीं।"

मंजु और संजय खुशी-खुशी किटी को फिर से उड़ते और आकाश में मंडराते देखते रहे ।

कूदती-फांदती

ऐंठती-मुड़ती

थिरकती-फिरकती

झूलती-डोलती

पतंग मंडरा रही थी ।

किटी ऊपर और ऊपर चली गई ।

अब वह

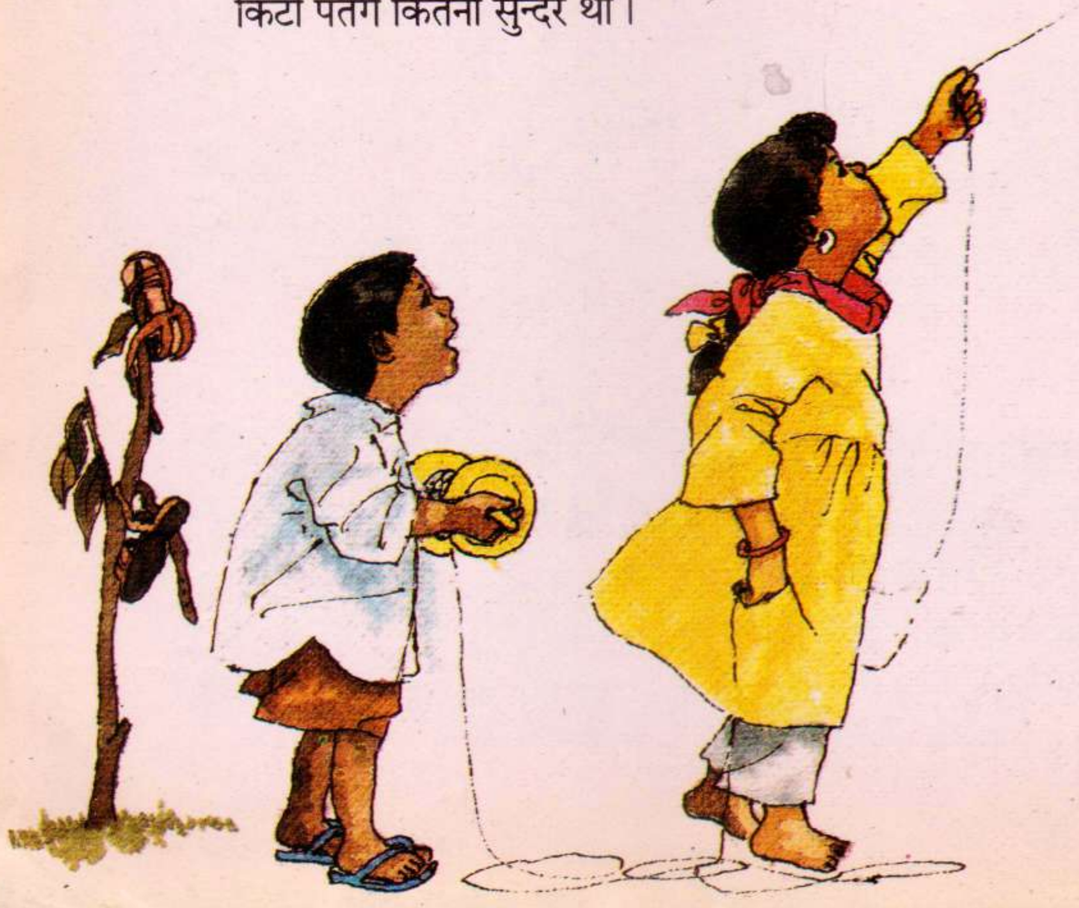
आकाश में

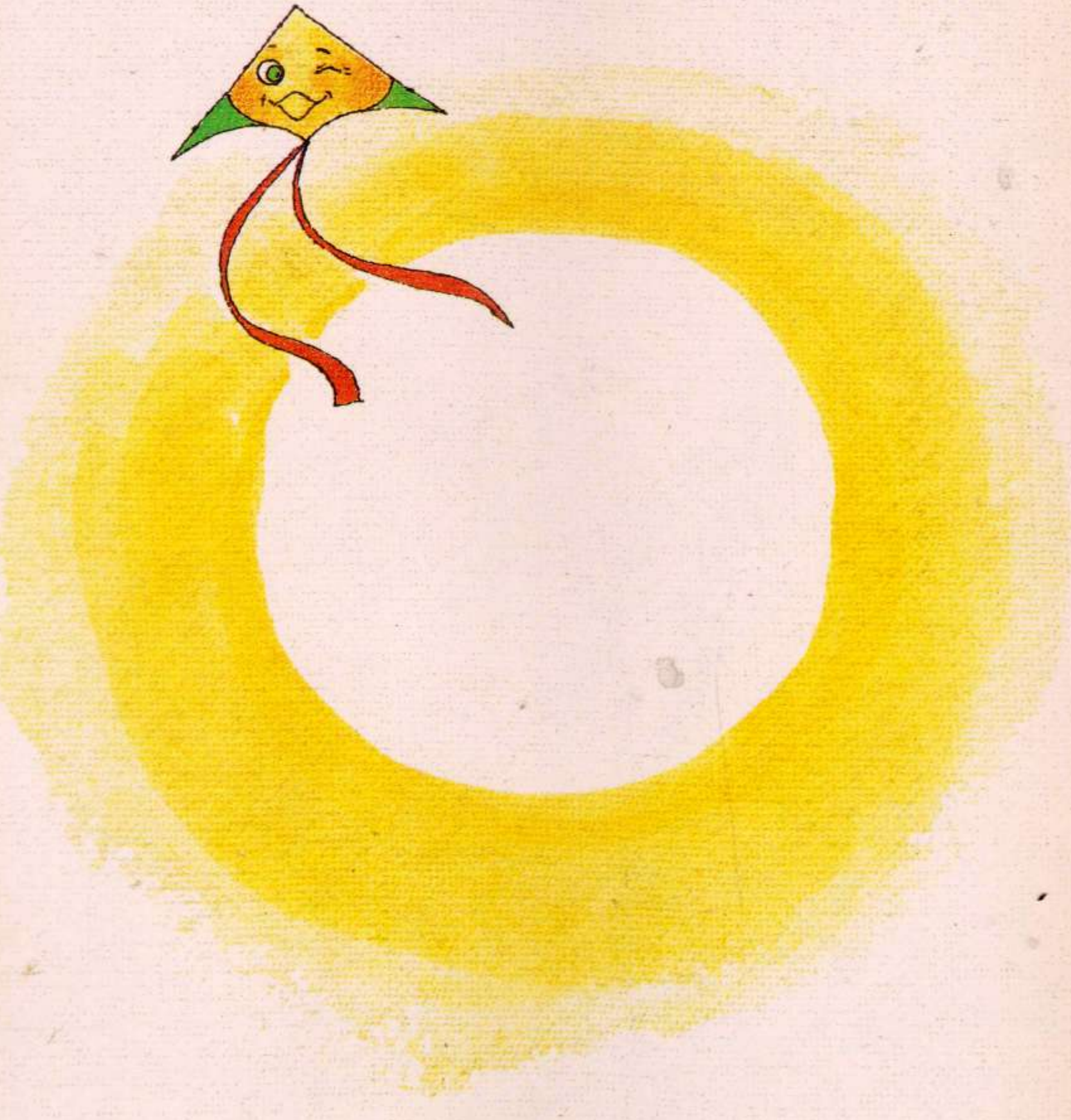
केवल

एक पीला

धब्बा ही लग रही थी ।

किटी पतंग कितनी सुन्दर थी ।





चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, ४ बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।



Rs 6.00 H 190

ISBN 81-7011-372-5